Dr• Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Det.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh College Ara
Date; 07/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,

Topic -

CRITERIA OF ABNORMALITY

परिचय **(Introduction)**

असामान्य शब्द की परिभाषा अत्यन्त सरल दृष्टिगत होती है, लेकिन इसे मनोविज्ञान पर लागू करने से एक जटिल समस्या उत्पन्न होती है। मनोविज्ञान में असामान्यता की अवधारणा अस्पष्ट है तथा इसे परिभाषित करना अत्यन्त कठिन है। असामान्यता के उदाहरण विभिन्न अलग-अलग रूप ले सकते हैं तथा इसमें अलग-अलग विशेषताएँ भी शामिल हो सकती हैं। इसलिए, प्रथम दृष्टि में जो परिभाषाएँ उचित लगती हैं, वे कभी-कभी अनुचित तथा समस्याग्रस्त भी हो सकती है। अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन (American Psychological Association-APA) असामान्यता को असामान्य होने की स्थिति के रूप में परिभाषित करता है। असामान्यता स्वीकृत सामाजिक मानदंडों से उच्च डिग्री में व्यवहार का विचलन है। असामान्यता आमतौर पर एक समय में कई विशेषताओं की उपस्थिति से निर्धारित होती है।
असामान्यता को मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों ने विभिन्न कसौटियों के आधार पर पारिभाषित करने का प्रयास किया है जिनका उल्लेख अति आवश्यक है। किस्कर (Kisker, 1985) ने असामान्यता की कसौटियों / मानदंडों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया है जिनका वर्णन इस प्रकार है-

(1) वर्णनात्मक कसौटियाँ / मानदंड (Descriptive Criteria) तथा

(2) व्याख्यात्मक कसौटियाँ / मानदंड (Explanatory Criteria)

नीचे दोनों प्रकार के मानदण्डों की व्याख्या अलग-अलग की गई है-

वर्णनात्मक कसौटियाँ **(Descriptive Criteria)**

सामान्य एवं असामान्य व्यवहार का वर्णन करने वाले दृष्टिकोणों को वर्णनात्मक कसौटियों कहते हैं। अन्य शब्दों में, वर्णनात्मक कसौटियाँ हमें बतलाती हैं कि कौन-सा व्यवहार सामान्य है तथा कौन-सा व्यवहार असामान्य है। किस्कर ने वर्णनात्मक कसौटियों /मानदण्डों को निम्नलिखित पाँच भागों में विभाजित किया है-
नैतिक कसौटी/मानदण्ड (Ethical Criterion)-नैतिक मानदण्ड के अनुसार, जो व्यवहार समाज या संस्कृति के नैतिक नियमों के अनुकूल होता है उसे सामान्य व्यवहार तथा जो व्यवहार नैतिक नियम के प्रतिकूल होता है उसे असामान्य व्यवहार कहते है। जैसे- अहिंसा एक नैतिक मानक है। अतः अहिंसात्मक व्यवहार को सामान्य व्यवहार तथा हिंसात्मक व्यवहार को असामान्य व्यवहार की संज्ञा दी जाती है।

दोष **(Defects)**

नैतिक मानदण्ड में कई तरह के दोष हैं, जिनके कारण यह सामान्यता या असामान्यता की व्याख्या करने में सफल नहीं हो सका। कुछ दोष इस प्रकार है-

(i) इसका पहला दोष यह है कि नैतिकता एक सापेक्ष अवधारणा **(Relative Concept)** है। एक समाज या संस्कृति में जिस व्यवहार को नैतिक मानकर उसकी सराहना की जाती है, वहीं उसी व्यवहार को दूसरे समाज या संस्कृति में अनैतिक **(Immoral)** मानकर उसकी अवहेलना की जाती है। उदाहरण केलिए-किसी संस्कृति में चचेरे भाई-बहन के मध्य विवाह नैतिक मानकानुकूल है। अतः यह एक सामान्य व्यवहार है। जबकि किसी दूसरी संस्कृति में यहीं विवाह नैतिक मानक के प्रतिकूल है। अतः वहाँ यह एक असामान्य व्यवहार है।

(ii) इसका दूसरा दोष यह है कि कुछ व्यक्तियों में उच्च नैतिकता होते हुए भी वे व्यवहार विकृतियों **(Behaviour Disorders)** से पीड़ित हो सकते हैं जबकि कुछ व्यक्तियों में व्यवहार विकृतियों के होते हुए भी वे किसी प्रकार का अनैतिक व्यवहार करते नहीं देखे जाते है। प्रश्न यह है कि हम उन्हें क्या माने, सामान्य या असामान्य **?** नैतिक कसौटियों के आधार पर इन प्रश्नों का समाधान सम्भव नहीं है। अतः यह कसौटी सामान्य या असामान्य व्यवहार की समुचित व्याख्या करने में असफल रहा है।